यमुना की रक्षा कैसे हो?

भारत डोगरा

भारतीय इतिहास और संस्कृति में यमुना नदी का वर्णन बहुत सुंदर, मनोहर, जीवनदायिनी, सदानीरा नदी के रूप में किया गया है। पर हाल के वर्षों में इसके एक बड़े क्षेत्र में प्रदूषण असहनीय हद तक बढ़ गया है और अनेक स्थानों पर तो गैर-मानसून महीनों में नदी लुप्त होने जैसी स्थिति में है। 'अति प्रदूषित नदी' की पहचान के लिए बीओडी (बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमाण्ड) पर आधारित जो मानदंड तय किया गया है, दिल्ली में निज़ामुद्दीन पुल पर प्रदूषण उससे भी पांच गुना पाया गया जबकि आगरा नहर में यह चार से पांच गुना अधिक पाया गया है। मथुरा, आगरा, इटावा में यह प्रदूषण इस मानदंड की तुलना में अढ़ाई गुना पाया गया है (आंकड़े 11वीं योजना दस्तावेज़ से हैं)।

यमुना नदी की रक्षा के लिए जहां प्रदूषण पर असरदार नियंत्रण ज़रूरी है, वहीं नदी के प्राकृतिक बहाव के लिए पर्याप्त ताज़े पानी की उपलब्धि भी अति आवश्यक है। इस नदी की रक्षा के लिए इसे तीन क्षेत्रों में बांटकर सुझाव देने चाहिए क्योंकि इन तीन क्षेत्रों की स्थिति अलग-अलग है।

पहला क्षेत्र यमुनोत्री ग्लेशियर से लेकर ताजेवाला तक है। इस क्षेत्र में नदी मुख्य रूप से पहाड़ी क्षेत्र में बहती है। इस क्षेत्र में जल की गुणवत्ता तो ठीक है, पर यमुना व उसकी सहायक नदियों, जैसे गिरि व टोंस आदि पर अधिक बांध निर्माण से नई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। यदि मुख्य उद्देश्य नदी के प्राकृतिक बहाव को ठीक करना व उसमें पर्याप्त जल उपलब्ध करवाना है, तो इन नदियों के पानी को प्राकृतिक बहाव से और हटाना उचित नहीं है। इसके अतिरिक्त वर्तमान नीतियों से विस्थापन व पर्यावरण क्षति की कई समस्याएं भी उत्पन्न हो रही हैं। इस पहाड़ी जल ग्रहण क्षेत्र में वृक्षों की रक्षा, मिट्टी व जल संरक्षण के उपाय बहुत ज़रूरी हैं।

यमुना नदी का दूसरा क्षेत्र ताजेवाला के आसपास शुरू होता है, जहां से यमुना का लगभग सारा जल पूर्वी व पश्चिमी यमुना नहरों की ओर मोड़ दिया जाता है। इस तरह यमुना नदी में ताज़ा पानी बहुत कम बचता है जबकि प्रदूषण का दबाव बढ़ता जाता है। यमुना नदी के इस क्षेत्र में दिल्ली, मथुरा, आगरा जैसे महत्वपूर्ण नगर हैं। दिल्ली के मुख्य क्षेत्र में गैर-मानसून महीनों में यमुना के प्राकृतिक बहाव के लिए पर्याप्त जल यमुना नदी में छोड़ा जाना चाहिए। साथ ही पिछली गलतियों से सबक सीखते हुए प्रदूषण को कम करने व इसके उपचार के लिए ज़रूरी सुधार होने चाहिए। यमुना के साथ उसकी सहायक नदियों, जैसे हिंडन का प्रदूषण नियंत्रण भी ज़रूरी है।

मानसून के महीनों में यमुना में काफी पानी आता है और कभी-कभी तो दिल्ली जैसे महत्वपूर्ण शहर में बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अतः यमुना जैसी इठलाने-घूमने वाली नदी के लिए आसपास पर्याप्त खुली भूमि छोड़ी जानी चाहिए। इस खादर भूमि या फ्लड प्लेन में खेती हो सकती है, कुछ स्थानीय प्रजाति के वृक्ष लग सकते हैं, घास व

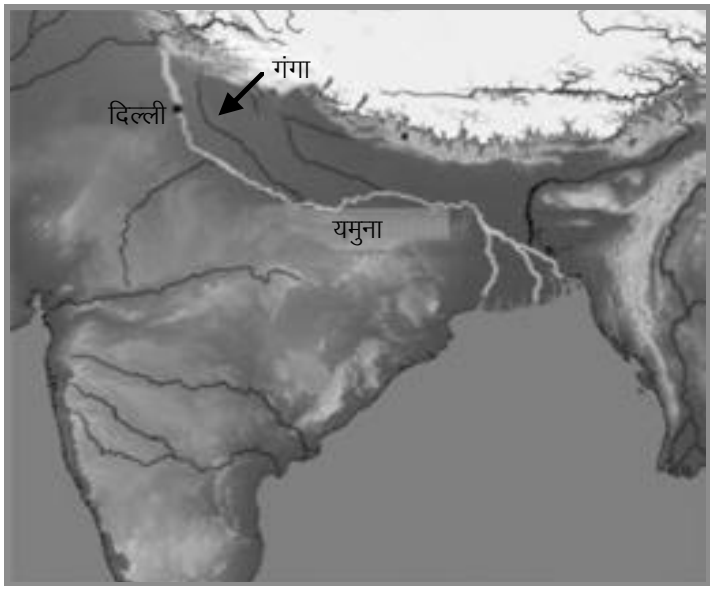

झाड़ियां उग सकती हैं, किसानों व पशुपालकों को कुछ आजीविका मिल सकती है, पर यहां सीमेंट-कांक्रीट के भारी निर्माण कार्य नहीं होने चाहिए। यहां वर्षा का जल एकत्र होता है व नीचे रिसकर पानी के संकट से जूझ रहे दिल्ली जैसे शहरों के लिए भूजल भंडार बनाता है। इस अति महत्वपूर्ण पर्यावरणीय भूमिका को बचाए रखना चाहिए। इधर-उधर घूमकर बहने वाली नदी को तटबंधों द्वारा संकीर्ण चैनल में बांधने की योजनाएं भी बहुत खतरनाक सिद्ध हो सकती हैं। अतः इनसे बचना चाहिए।

यमुना नदी का तीसरा क्षेत्र इटावा ज़िले में वहां आरंभ होता है जहां चंबल नदी यमुना में मिलती है। यहां से यमुना को जैसे नवजीवन मिलता है क्योंकि उसे प्राकृतिक बहाव के लिए पर्याप्त जलराशि मिल जाती है। आगे केन व बेतवा जैसी अन्य सहायक नदियों के मिलने से यह जलराशि और बढ़ जाती है। परिणाम यह है कि इलाहाबाद में गंगा से संगम के पहले यमुना एक भरी-पूरी नदी के रूप में नज़र आने लगती है। पर इस क्षेत्र में भी संकट के कुछ बादल मंडराने लगे हैं। चंबल व कुछ अन्य सहायक नदियों में प्रदूषण बढ़ रहा है। केन-बेतवा नदी जोड़ परियोजना के कारण यमुना की इन सहायक नदियों के क्षेत्र में कई गंभीर समस्याएं उत्पन्न होने की आशंकाएं व्यक्त की गई हैं।

अतः यमुना नदी के इन तीनों क्षेत्रों पर समुचित ध्यान देने की ज़रूरत है। मगर फिलहाल सबसे अधिक चिंता ताजेवाला से इटावा तक के दूसरे क्षेत्र की है जहां दूर-दूर तक यमुना लुप्तप्राय हो रही है व प्रदूषण की समस्या भी सबसे विकट है। ***(स्रोत फीचर्स)***